मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 9

nbt.india

एकः सूते सकलम्

सितंबर 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

खड़गपुर एवं भावनगर में शिक्षकों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम 2

नैनीताल में तीसरे हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला का आयोजन 3

बवाना, दिल्ली में कार्यशाला का आयोजन 3

शीला दीक्षित द्वारा प्रकाशन में पीजी डिप्लोमा की शुरुआत 4

किशनगंज पुस्तक प्रदर्शनी 4

नेपाल पुस्तक मेला 4

स्वामी विवेकानंद के दर्शन व आदर्शों पर पुस्तक-प्रकाशन की योजना 5

19वें दिल्ली पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास 5

पुस्तक परिचय 6

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह 7

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नए प्रकाशन : एक परिचय 7

चिट्ठीघर 8

चित्रकार पुलक विश्वास नहीं रहे 8

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले 8

नवीनतम प्रकाशन

शाश्वत विद्रोही राजनेता

आचार्य जे.बी. कृपलानी

रामबहादुर राय

पृ. 348 ₹ 200

ISBN 978-81-237-6890-8

दिल्ली पुस्तक मेला में रा.बा.सा.कें. की मासिक बैठक

'आज के बच्चों के लिए कहानियाँ : परंपरा से कैसे जोड़ें'

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) की मासिक बैठक में 29 अगस्त, 2013 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिल्ली के प्रगति मैदान में 23 से 31 अगस्त तक चले 19वें दिल्ली पुस्तक मेले के दौरान हॉल नं. 8 के सभागार में आयोजित संगोष्ठी का विषय था—आज के बच्चों के लिए कहानियाँ : परंपरा से कैसे जोड़ें। मुख्य वक्ता थे—आकाशवाणी दिल्ली से जुड़े तथा कवि एवं बाल साहित्यकार श्री राजेंद्र उपाध्याय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीइआरटी) में कला एवं सौंदर्य शिक्षा शास्त्र विभाग की डॉ. शरबरी बनर्जी। कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यास-निदेशक श्री एम. ए. सिकंदर ने की।

श्री राजेंद्र उपाध्याय ने अपने सारगर्भित संबोधन में कहा कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए हमें बच्चों को पुस्तकों की ओर मोड़ना होगा। लेकिन बच्चों के लिए पुस्तकें भी वैसी होनी चाहिए जो उन्हें अपनी ओर खींचे। इसके लिए जरूरी है कि पुस्तकें बोझिल एवं उपदेशात्मक न हों। हमें पुस्तकों को बहुआयामी बनाना होगा। श्री उपाध्याय ने अपने संबोधन में पुस्तकों एवं पठन रुचि पर काफी विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि हमें बच्चों में पुस्तकालय जाने की आदत डालनी चाहिए। केरल का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि वहाँ अब भी पढ़ने के प्रति उत्साह है; लोग ट्रेन में, बस में भी पुस्तकें पढ़ते हैं। उन्होंने पुस्तक पर अपनी महत्वपूर्ण टिप्पणी दी, बोले—एक किताब बहुत दूर तक यात्रा करती है। किताबें सदा हमारे साथ रहती हैं, संकट में साथ देती हैं। उन्होंने बच्चों के लिए पुस्तक कैसी हो इस पर विस्तार से बात की। उन्होंने कहा—बच्चों के लिए पुस्तकें रुचिकर हों। केवल सूचनाओं का अंबार लगा देना किसी पुस्तक का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। उन्होंने समाज को लक्ष्य करके कहा—समाज पाठक भी पैदा करता है। अपने संबोधन के समापन रूप में उन्होंने कहा—हमें अपनी ही जड़ों की ओर फिर लौटना होगा। अपने लंबे संबोधन में उन्होंने बार-बार रा.पु. न्यास का नाम लिया और पुस्तकोन्नयन के लिए किए जाने वाले कार्यों के लिए उन्होंने इसकी सराहना की।

डॉ. शरबरी बनर्जी ने बेहद अनौपचारिक होकर

बैठक में उपस्थित बच्चों के साथ संवाद किया और उन्हें पढ़ने-लिखने के प्रति प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पुस्तकें वैसी हों जो पाठ को 'सपोर्ट' करे, साथ ही मनोरंजन भी करे। उन्होंने कहा, ''किताबें हमारे दिमाग को खोलती हैं। यह हमें कुछ अच्छा करने को प्रेरित करती हैं।'' डॉ. बनर्जी ने रा.पु. न्यास के पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की, साथ ही रा.पु. न्यास की पुस्तकों के 'कन्टेन्ट' की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा, ''रा.पु. न्यास केवल प्रकाशन संस्थान ही नहीं बल्कि एक शोध केंद्र भी है।''

अपने अध्यक्षीय संबोधन में न्यास-निदेशक एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एम.ए. सिकंदर ने पुस्तक, पुस्तक पठन एवं बच्चे तथा युवाओं की विशेष तौर पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमें पुस्तकें बच्चों और युवाओं तक ले जानी है। उन्होंने आज के दौर में डिजिटल सामग्री की ओर बच्चों के रुझान पर कहा कि ''डिजिटल दुनिया की उपस्थिति को हमें मानना होगा, लेकिन हमें आज के बच्चों को डिजिटल दुनिया से अलग पुस्तकों की दुनिया से जोड़ने पर विशेष बल देना है।'' उन्होंने बिहार की विशेष रूप से चर्चा करते हुए कहा कि वहाँ पुस्तक पढ़ने की अच्छी संस्कृति है। कार्यक्रम के अध्यक्ष सह न्यास-निदेशक ने अपने सारगर्भित संबोधन में कहा, ''संस्कृति और भाषा हमारी पहचान के स्रोत हैं। हमारी यही पहचान हमें जीवित रखती हैं।'' श्री सिकंदर ने पुस्तकालय संस्कृति को पुनर्जीवित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ''पुस्तकालय एक प्रकार से मंदिर है।'' निदेशक महोदय ने रा.पु. न्यास की पुस्तकोन्नयन के प्रति किए जा रहे कार्यों की जानकारी देने के क्रम में बताया कि पुस्तक मेला का सिलसिला रा.पु. न्यास ने ही शुरू किया था। उन्होंने दिल्ली में और अधिक पुस्तक मेला लगाने की आवश्यकता पर बल दिया, साथ ही पुस्तकोन्नयन से जुड़े व्यक्ति एवं संस्था को न्यास की ओर से हर तरह के सहयोग की बात भी उन्होंने कही। ''पुस्तकोन्नयन एक सेवा है।'' उनके इस कथन का करतल ध्वनि से स्वागत हुआ।

कार्यक्रम का समन्वय और संचालन रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने किया। उन्होंने पूरे कार्यक्रम में एक सूत्रधार की भूमिका निभाई और टुकड़ों-टुकड़ों में पुस्तक, पुस्तक संस्कृति, पुस्तक पठन पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि आधुनिकता हमारी जरूरत है और परंपरा को हम छोड़ नहीं सकते। दरअसल, हमें परंपरा और आधुनिकता को जोड़ने की जरूरत है, न कि किसी को भी छोड़ने की। कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं और मंचस्थ वक्ताओं के मध्य खुला संवाद सत्र चला। प्रेमपाल शर्मा, लक्ष्मी कन्नन 'सुमन' सरीखे कुछ लेखकों ने मंच से अपनी भावाभिव्यक्तियाँ कीं। कार्यक्रम का समापन श्री मानस रंजन महापात्र द्वारा अतिथियों एवं आगंतुकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

खड़गपुर एवं भावनगर में शिक्षकों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम

विगत जुलाई माह में बच्चों में आनंददायक पठन आदत के प्रोन्नयन एवं बाल साहित्य आंदोलन को मजबूत करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) द्वारा खड़गपुर (प. बंगाल) एवं भावनगर (गुजरात) में शिक्षकों के लिए 'रीडर्स क्लब का संचालन कैसे करें' विषय पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

खड़गपुर में रीडर्स क्लब अभिमुखीकरण का आयोजन साउथ इस्टर्न रेलवे गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल में 18-19 जुलाई, 2013 को हुआ। संभागीय रेलवे प्रबंधक श्री आर.के. कुलश्रेष्ठ ने इस दो दिवसीय आयोजन, साथ ही, बच्चों के लिए रा.पु. न्यास की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। रेलवे बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री प्रेमपाल शर्मा, दक्षिण-पूर्वी रेलवे के चीफ पर्सोनेल ऑफिसर श्री मनोज पांडे एवं रेल मंत्रालय के अनेक उच्चाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति भी इस सत्र में उपस्थित रहे।

इस दो दिवसीय आयोजन में दक्षिण-पूर्वी रेलवे के अंतर्गत कार्यरत 30 से अधिक

पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में जिन विषयों पर चर्चा हुई वे थे–पढ़ने की बदलती प्रवृत्ति एवं आयाम, सृजनात्मक लेखन, कथावाचन कौशल, वाल पेपर का निर्माण, बच्चों के आनंददायक पठन के लिए एक अच्छी पुस्तक का चयन कैसे करें तथा पठन की दुनिया से जुड़े लेखकों एवं व्यक्तियों के साथ संवादात्मक सत्र का आयोजन कैसे करें। कार्यक्रम में संदर्भ सहयोग मिला लेखकद्वय डॉ. कृपा शंकर चौबे तथा श्रीमती शैलबाला महापात्र एवं शिक्षाविद् श्रीमती कर्बी मुखोपाध्याय का। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

भावनगर

भावनगर (गुजरात) में 23 जुलाई को शिक्षकों के लिए रीडर्स क्लब अभिमुखीकरण कार्यक्रम के आयोजन में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को भावनगर जिला प्राथमिक शिक्षक संघ (जिला स्तरीय शिक्षक समिति, भावनगर) का सहयोग मिला।

कार्यक्रम का उद्घाटन जीसीईआरटी के पूर्व निदेशक डॉ. नलिन पंडित द्वारा किया गया। डॉ. पंडित ने अपने प्रेरणाप्रद संबोधन में पुस्तक एवं पठन के महत्व के साथ-साथ स्कूल के पुस्तकालयों में किए जा सकने वाले पठन संबंधित गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। भागीदारों को संदर्भ व्यक्तियों द्वारा बच्चों के आनंददायक पठन के लिए वातावरण के विकास हेतु विभिन्न साधनों एवं तरीकों के बारे में बताया गया। विभिन्न सत्रों में अनेक आनंददायक पठन प्रोन्नयन गतिविधियों पर उदाहरणों के साथ चर्चा-विमर्श किया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात शैक्षिक कार्यकर्ता श्री परीक्षित जोशी एवं रतन सिंह गोहिल का संदर्भ सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का समन्वय-संयोजन न्यास में गुजराती भाषा संपादक श्री भाग्येंद्र बी. पटेल ने किया।

नैनीताल में तीसरे हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा अकैडमी, दिल्ली द्वारा नैनीताल में 23 से 25 जुलाई, 2013 तक तीसरे हिंदी सम्मेलन व कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से हिंदी संपादक व राजभाषा अधिकारी, श्रीमती उमा बंसल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, सुश्री अल्पना भसीन व वरिष्ठ आशुलिपिक, श्री सुभाष चंद्र ने भाग लिया। इस सम्मेलन व कार्यशाला में देशभर के विभिन्न सरकारी कार्यालयों से 50 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत सरकार के राजभाषा संबंधी आदेशों/निर्देशों का अनुपालन करते हुए सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के साथ-साथ कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी देने के उद्देश्य से इस अकैडमी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन व कार्यशाला में पाँच सत्र आयोजित किए गए।

पहले सत्र का शुभारंभ 23 जुलाई को अपराह्न में दीप प्रज्वलन व उपस्थित प्रतिनिधियों के स्वागत व परिचय के साथ हुआ।

24 जुलाई को कार्यक्रम के दूसरे सत्र में केंद्रीय हिंदी संस्थान के उप-निदेशक, श्री एम.एल. शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी के संवैधानिक उपबंध' विषय पर चर्चा की जिसमें उन्होंने विस्तार से संविधान में वर्णित हिंदी राजभाषा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण अनुच्छेदों की जानकारी दी तथा 'संघ की राजभाषा नीति' संबंधी प्रमुख बिंदुओं से अवगत कराया। तीसरे सत्र में वहाँ संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय में हिंदी सलाहकार, श्री सुभाष चंदर ने 'हिंदी में टिप्पण-आलेखन' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की हिंदी संपादक व राजभाषा अधिकारी, श्रीमती उमा बंसल ने की। 25 जुलाई को चौथे व पाँचवें सत्र के दौरान न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के उपप्रबंधक, श्री भूपेंद्र ने कंप्यूटर पर उपलब्ध हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयर की जानकारी पॉवर प्वाइंट प्रदर्शन के माध्यम से दी।

यूनिकोड प्रणाली को लेकर प्रतिभागियों में जानने की अधिक उत्सुकता थी। साथ ही लिप्यंतरण व मशीनी अनुवाद को किए जाने तथा उसमें संभावित सुधार संबंधी जानकारी आदि ऐसे विषय भी थे जिन्हें जानने के लिए और अधिक समय की आवश्यकता थी, लेकिन उत्तराखंड आपदा की वजह से समय नहीं मिल सका। कार्यक्रम के इस अंतिम चरण में श्री भूपेंद्र ने प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत किया। तत्पश्चात एक अनौपचारिक साहित्यिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने स्वरचित रचनाएँ प्रस्तुत कीं तथा हिंदी को लेकर कार्यालय में आने वाली कठिनाइयों की चर्चा की।

राजभाषा अकैडमी के निदेशक, श्री अभिषेक शर्मा, के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन व कार्यशाला का समापन हुआ।

बवाना, दिल्ली में कार्यशाला का आयोजन

बवाना, दिल्ली के जे.जे. कॉलोनी में पठन रुचि और पुस्तकोन्नयन पर 17 अगस्त, 2013 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन जे.जे. कॉलोनी, बवाना स्थित एमसीडी प्राइमरी गर्ल्स स्कूल, बी-2 में किया गया था। इसके अंतर्गत कक्षा 3, 4 एवं 5 के 20 से अधिक छात्रों ने एक चित्रांकन प्रतियोगिता में भाग लिया। चित्रांकन हेतु सामग्री राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा उपलब्ध कराई गई थी। कक्षा 4 एवं 5 के विद्यार्थियों द्वारा नृत्य का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यशाला की खास बात यह रही कि इसका उद्घाटन स्कूली बच्चों द्वारा ही किया गया।

कार्यक्रम में एमसीडी स्कूल, बवाना के प्रधानाचार्य श्री नरेंदर दत्ता, ई-3, जे.जे. कॉलोनी एमसीडी स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती वेद वत्ती तथा एमसीपीएस, बी-2, एमसीडी स्कूल, बवाना की प्रधानाचार्य श्रीमती विजया कुमारी उपस्थित हुईं। न्यास में उपनिदेशक (प्रदर्शनी) श्री प्रदीप छाबड़ा विशेष रूप से उपस्थित हुए। रा.पु. न्यास में सहायक निदेशक (प्रदर्शनी) डॉ. दीपांकर गुप्ता एवं सहायक श्रीमती सुनीता नरोत्रा ने कार्यक्रम का संयोजन-समन्वय किया।

कार्यक्रम में अपने संबोधन में श्री नरेंदर दत्ता तथा श्रीमती विजया कुमारी ने रा.पु. न्यास की गतिविधियों की सराहना की। श्री प्रदीप छाबड़ा ने न्यास द्वारा आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी दी, साथ ही, उन्होंने धन्यवाद-ज्ञापन भी किया।

कार्यशाला के साथ-साथ स्कूल परिसर में रा.पु. न्यास का सचल पुस्तक प्रदर्शनी वाहन भी खड़ा था, जिसमें पुस्तकें विक्रयार्थ रखी हुई थीं। इस प्रदर्शनी वाहन का अच्छा प्रतिभाव मिला।

कार्यशाला में 200 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। सभी बच्चे को रा.पु. न्यास की ओर से एक-एक पुस्तक दी गई, साथ ही नाश्ता-पानी का भी प्रबंध था।

चित्रांकन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए, साथ भी नृत्य के सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया।

भाग लें
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
15 से 23 फरवरी, 2014
एवं
नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
सम्मानित अतिथि देश : पोलैंड
www.newdelhiworldbookfair.gov.in

शीला दीक्षित द्वारा प्रकाशन में पीजी डिप्लोमा की शुरुआत

समकालीन प्रकाशन उद्योग में सर्वतोमुखी कुशल व्यावसायिकों की सर्जना की आवश्यकता के मद्देनजर आंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली (एयूडी) ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के सहयोग से वर्तमान अकादेमिक वर्ष से प्रकाशन में एक साल के पोस्ट-ग्रैजुएट डिप्लोमा की शुरुआत की है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीया श्रीमती शीला दीक्षित ने 4 जुलाई, 2013 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दिल्ली में रा.पु. न्यास और एयूडी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पीजी डिप्लोमा कोर्स का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में श्रीमती शीला दीक्षित ने कहा, ''इस पाठ्यक्रम की शुरुआत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस पाठ्यक्रम की शुरुआत करने के लिए आंबेडकर यूनिवर्सिटी के प्रयास की मैं सराहना करती हूँ, साथ ही इस पाठ्यक्रम में भागीदारी एवं सहयोग के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत को भी मैं धन्यवाद देती हूँ। दिल्ली शिक्षा का एक केंद्र है, और दिल्ली में प्रकाशन क्षेत्र में प्रबल संभावना है।''

आंबेडकर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. श्याम बी. मेनन ने कहा कि प्रकाशन में एक साल (दो सेमेस्टर) का पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम इस तरह बनाया गया है जिससे इच्छुक प्रतिभागियों को प्रकाशन क्षेत्र के विविध आयामों, यथा–प्रशासन एवं प्रबंधन, विक्रय एवं विपणन, उत्पादन, संपादन, डिजाइन, वितरण आदि सभी के संबंध में संपूर्ण जानकारी एक ही जगह मिल सके।

पुस्तक प्रकाशन पाठ्यक्रम पुस्तक प्रकाशन के विभिन्न आयामों, यथा–संपादन, पुस्तकों के प्रतिलिप्यधिकार का निर्यात, अनुवाद और उत्पादन की तकनीक आदि को सम्मिलित करेगा।

इससे पूर्व, रा.पु. न्यास के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अतिथियों और पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रकाशन में एक साल के पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की शुरुआत करने के लिए आंबेडकर यूनिवर्सिटी से जुड़कर उन्हें खुशी का अनुभव हो रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में रा.पु. न्यास कुछ अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर पुस्तक प्रकाशन में कुछ और भी ऐसे ही संयुक्त कार्यक्रमों की शुरुआत करेगा। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम नितांत संवादात्मक होगा और प्रतिभागियों के लिए इस पाठ्यक्रम की समाप्ति पर प्रकाशन उद्योग में अपने करिअर को शुरू करने में सहायक होगा।

आंबेडकर यूनिवर्सिटी के सम-कुलपति प्रो. चंदन मुखर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस उद्यम में रा.पु. न्यास के सहयोग-समर्थन के लिए उन्होंने रा.पु. न्यास को विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया।

विदित हो कि भारत का प्रकाशन उद्योग पूरे विश्व में सबसे बड़ा है। यह उद्योग अँग्रेजी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी पर्याप्त सुदृढ़ और जीवंत है। विगत कुछ दशकों में भारतीय प्रकाशन उद्योग का तीव्र विकास हुआ है। विशेषीकृत क्षेत्र में प्रकाशन के लिए आने वाले समय में नए-नए प्रकाशन गृह सामने आएँगे। भारतीय लेखन की वैश्विक दृश्यता के बढ़ने के साथ ही पुस्तक उद्योग में व्यावसायिकता भी बढ़ेगी, इसके साथ ही रोजगार के अवसर भी बढ़ने वाले हैं। आज विभिन्न विशेषीकृत क्षेत्रों, यथा–अकादेमिक, इंजीनियरिंग, कला, प्रबंधन, विपणन, वित्त एवं प्रकाशन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए कानून, संपादन, उत्पादन, डिजाइन, विक्रय एवं विपणन के लिए प्रतिभावान एवं कुशल व्यक्तियों की अत्यंत आवश्यकता है। इस माँग को देखते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास देश भर में प्रकाशन पाठ्यक्रम का आयोजन कर रहा है।

किशनगंज पुस्तक प्रदर्शनी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 11 से 17 जून, 2013 के दौरान कम्यूनिटी हॉल, उर्दू लाइन स्कूल, किशनगंज (बिहार) में सात दिवसीय पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में अँग्रेजी, हिंदी और उर्दू भाषा की पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं।

प्रदर्शनी का उद्घाटन 11 जून, 2013 को स्थानीय सांसद मौलाना असरारूल हक कासमी द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्थानीय संयोजक श्री अंजर अलीम, मो. शाजी, हैदर रजा खान, अनीसुर रहमान व बड़ी संख्या में पत्रकार और पुस्तकप्रेमी मौजूद थे।

प्रदर्शनी के उद्घाटन पर माननीय सांसद कासमी जी ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में अति पिछड़े किशनगंज जैसे सुदूरवर्ती क्षेत्र में पठन-पाठन की खाई को पाटने की राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की यह एक नायाब पहल है। उन्होंने कहा कि कलम व किताब का आज आदमी की जिंदगी में अहम स्थान है। उन्होंने शिक्षा के स्तर को बढ़ाने व हर संभव सहायता का वचन देते हुए स्थानीय पुस्तकालय वज्मे अबद लाइब्रेरी को 50,000 रु. मूल्य की पुस्तकें प्रदर्शनी से खरीदे जाने की बात कही। इस अवसर पर कुछ अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी पुस्तकप्रेमियों को संबोधित किया। वक्ताओं ने रा.पु. न्यास के पुस्तकोन्नयन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

न्यास में उप-निदेशक (उ.क्षे.) इमरानुल हक ने न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकों एवं न्यास की अन्य गतिविधियों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया; साथ ही, मुख्य अतिथियों का स्वागत भी किया।

नेपाल पुस्तक मेला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने 24 मई से 1 जून, 2013 तक नेपाल की राजधानी काठमांडू में चले 17वें शैक्षणिक एवं पुस्तक मेले में भाग लिया। कार्यक्रम स्थल था भुकुटी मंडप, काठमांडू।

24 मई को पुस्तक मेले के उद्घाटन कार्यक्रम में नेपाल के राष्ट्रीय पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री बसंत थापा ने स्वागत भाषण दिया। मेले का उद्घाटन नेपाल एकेडमी के चांसलर श्री बैरागी कैनाला तथा नेपाल एकेडमी ऑफ म्यूजिक एंड ड्रामा के चांसलर श्री अम्बर गुरुंग ने दीप जलाकर किया।

काठमांडू में भारतीय दूतावास के राजदूत श्री जयंत प्रसाद तथा नेपाल-भारत लाइब्रेरी के श्री मीना पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के स्टॉल में आए तथा न्यास के स्टॉल की प्रशंसा की।

इस पुस्तक मेले में रा.पु. न्यास का प्रतिनिधित्व प्रदर्शनी अनुभाग के श्री एस.के. आर्या तथा श्री राज कुमार ने किया।

स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती वर्ष पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की

स्वामी विवेकानंद के दर्शन व आदर्शों पर पुस्तक-प्रकाशन की योजना

स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती वर्ष के मद्देनजर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत उनके दर्शन व आदर्शों पर नई पुस्तकों के प्रकाशन की योजना बना रहा है। इस हेतु 2 अगस्त, 2013 को नई दिल्ली स्थित न्यास मुख्यालय में न्यास-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन द्वारा गठित संपादकीय समिति की पहली बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में न्यास-अध्यक्ष एवं न्यास-निदेशक समेत कुल 9 पदाधिकारी एवं विशेषज्ञ उपस्थित थे।

न्यास-अध्यक्ष श्री सेतुमाधवन का विचार था कि देश की जनसंख्या में जिस तरह से बदलाव हुए हैं उससे शीघ्र ही देश में युवा शक्ति में वृद्धि होने वाली है। ऐसे में स्वाभाविक तौर पर हमें इन युवाओं को लक्षित कर उन्हें स्वामी विवेकानंद के आदर्शों एवं दर्शनों से परिचित कराना है। इस हेतु हम स्वामी विवेकानंद पर अधिक-से-अधिक पुस्तकों का प्रकाशन करना चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय का कहना था कि हम शीघ्र ही इस पर काम शुरू कर देंगे, और आगामी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में कुछ पुस्तकों का लोकार्पण भी कर सकेंगे। समिति इस लक्ष्य को समय-सीमा में पूरा करने के लिए एक दीर्घकालिक योजना भी बनाएगी।

न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर का कहना था समिति को युवाओं की रुचि को ध्यान में रखकर स्वामी विवेकानंद पर आधारित पुस्तकें निकालने का विचार करना चाहिए। प्रारंभ में 50-60 पृष्ठों की चित्रित पुस्तकों का प्रकाशन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अन्य प्रकाशनों से पूर्व में प्रकाशित ऐसी पुस्तकों के पुनर्प्रकाशन हेतु भी हम उन प्रकाशकों से समझौता-ज्ञापन करेंगे। उन्होंने कहा कि विश्व में आध्यात्मिक पुस्तकों की बढ़ती माँग के मद्देनजर विवेकानंद पर पुस्तक प्रकाशित करने की हमारी यह परियोजना समयोचित और व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद भी होगी।

वक्तागण, क्रमशः पद्मश्री सुगाथाकुमारी, प्रख्यात साहित्यकार; डॉ. निर्मल कांति भट्टाचार्जी, प्रख्यात साहित्यकार; प्रो. एन.एन. पिल्लई, निदेशक, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली; स्वामी शांतआत्मानंद, सचिव रामकृष्ण मिशन, नई दिल्ली एवं श्री के.जी. सुरेश, संपादक, विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन ने भी अपने विचार रखे।

बैठक में वक्ताओं के विचार-विमर्श से निम्न बातें उभरकर आईं :

1. न्यास के सतत शिक्षा के अंतर्गत विवेकानंद पर प्रकाशित पुस्तक का अँग्रेजी समेत अनेक भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित किया जाएगा। इसमें आवश्यकतानुसार तस्वीरों का भी समावेश होगा।
2. रामकृष्ण मिशन से प्रकाशित दो पुस्तकों का न्यास अँग्रेजी समेत अनेक भाषाओं में प्रकाशन करेगा।
3. सुश्री रश्मि बंसल से स्वामी विवेकानंद के स्त्रियों पर विचार संबंधी पुस्तक लिखने का अनुरोध किया जाएगा।
4. डॉ. स्वरूप राय स्वामी विवेकानंद एवं युवाओं को लेकर एक मोनोग्राफ लिखेंगे।
5. डॉ. सब्यसाची भट्टाचार्जी स्वामी विवेकानंद के लेखन पर आधारित एक पुस्तक का संपादन करेंगे।
6. स्वामी विवेकानंद के विचारों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन किया जाएगा।
7. प्रकाशन विभाग की स्वामी विवेकानंद पर प्रकाशित पुस्तक के पुनर्प्रकाशन की कोशिश की जाएगी।
8. स्वामी विवेकानंद की रोम्या रोलाँ द्वारा लिखित जीवनी का भी प्रकाशन किए जाने की बात हुई।

बैठक में न्यास में मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बलदेव सिंह बद्दन एवं अँग्रेजी संपादक एवं परियोजन प्रभारी श्री द्विजेंद्र कुमार भी उपस्थित थे।

19वें दिल्ली पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

23 से 31 अगस्त, 2013 तक चले 19वें दिल्ली पुस्तक मेले का समापन हो गया। दिल्ली के प्रगति मैदान में भारतीय व्यापार उन्नयन परिषद (ITPO) एवं भारतीय प्रकाशक संघ (FIP) के इस संयुक्त आयोजन में सदा की भाँति राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा भी अपना स्टॉल लगाया गया था। भा.प्र.सं. के अध्यक्ष श्री सुधीर मल्होत्रा के अनुसार इस बार पुस्तक मेले में 250 से अधिक प्रकाशक आए। देश के विभिन्न भागों से आए प्रकाशकों के अलावा जिन अन्य देशों ने इसमें भागीदारी की, वे थे–चीन, मलेशिया, यूके तथा यूएसए।

विदित हो कि पुस्तक मेले के आयोजन हेतु राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा भा.प्र.सं. को आर्थिक अनुदान भी दिया गया।

पुस्तक मेले में न्यास का स्टॉल हॉल नं. 8 में लगा था। स्टॉल में हिंदी और अँग्रेजी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें भी प्रदर्शित थीं। बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से निर्मित न्यास के स्टॉल पर पुस्तकप्रेमियों की अपार भीड़ देखी गई। उल्लेखनीय है कि न्यास की पुस्तकें बेहद किफायती मूल्य की होती हैं और पाठकों में इन पुस्तकों की जबरदस्त लोकप्रियता और माँग है।

पुस्तक परिचय

फाइटर की डायरी (संघर्षगाथा)
मैत्रेयी पुष्पा; पृ. 232 ₹ 350
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
आज लड़कियाँ पारिवारिक चौहद्दी को लाँघकर मुक्ति की तलाश में हैं। इस पुस्तक में महिला कांस्टेबुल के रूप में नियुक्त प्रशिक्षु लड़कियों के संघर्ष की गाथा कही गई है। लेखिका ने इन सभी लड़कियों से बातचीत के आधार पर यह संघर्षगाथा लिखी है।

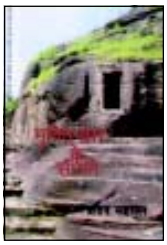

मुक्ति-द्वार के सामने (कविता संग्रह)
प्रताप सहगल; पृ. 84 ₹ 150
अमरसत्य प्रकाशन, 109, ब्लॉक-बी, प्रीत विहार, दिल्ली-92
इस संकलन में बच्चे हैं, चिड़ियाँ हैं, प्रकृति और परिवार है; रिश्ते हैं और रिश्तों की कशमकश भी। रचनाकार कहीं प्रश्नाकुल है तो कहीं प्रश्न के उत्तर देने की मुद्रा में भी। पसोपेश में न पड़कर सीधे ये कविताएँ पढ़ें, अच्छा लगेगा।

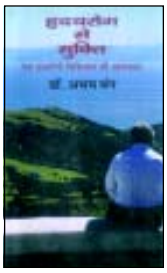

हृदयरोग से मुक्ति : एक हृदयरोगी चिकित्सक की आत्मकथा
डॉ. अभय बंग; पृ. 240 ₹ 300
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
आत्मकथात्मक शैली में लिखी यह पुस्तक हृदय का दौरा झेल चुके डॉक्टर लेखक की आपबीती है। मूल मराठी में लिखी इस पुस्तक को पढ़कर अनेक हृदयरोगी लाभान्वित हो चुके हैं यह कहा गया है इस पुस्तक की प्रस्तावना में।

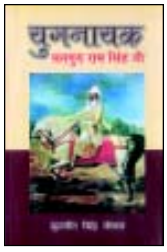

युगनायक सतगुरु राम सिंह जी
सुरजीत सिंह जोबन; पृ. 232 ₹ 350
इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, 18-बी, साउथ अनारकली, दिल्ली-51
गाँधी जी ने भारत आकर अघोषित रूप से जिन प्रेरक गुरुओं से प्रेरणा ली उनमें एक थे सिख शक्ति को एकता के मजबूत बंधन में बाँधने वाले सतगुरु राम सिंह जी। अँग्रेजी सत्ता का अहिंसात्मक विरोध उनका बड़ा हथियार था। ऐसी ही विभूति की जीवनी।

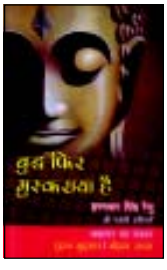

बुद्ध फिर मुस्कराया है (कविता संग्रह)
हरभजन सिंह रेणु
भाषांतर-संपादन : पूरन मुद्गल, मोहन सपरा
पृ. 80 ₹ 195
आस्था प्रकाशन, लाडोवाली रोड, जालंधर, पंजाब
शब्दों की मितव्ययिता के साथ सामाजिक-राजनीतिक सरोकारों पर लिखने वाले पंजाबी कवि रेणु बेमकसद कविता को गुनाह मानते हैं। उनके लेखन में भारतीय मिथक का प्रभावी प्रयोग दिखता है। रेणु की कविताएँ वस्तुतः विमर्श का प्रस्थानबिंदु भी हैं।

मुझे कुछ कहना है... (कविता संग्रह)
सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'; पृ. 96 ₹ 200
जूली पब्लिकेशन्स, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
कुछ गीत, कुछ ग़ज़ल, कुछ कविताएँ। कवयित्री कहती हैं–पाखी को तो पता है वह क्या चाहता है, पर मनुष्य अपनी चाहत में भटक रहा है।...इस संग्रह में विभिन्न विषयों और भावबोधों की कविताओं का सुंदर संगुंफन है।

मेरे साक्षात्कार (साक्षात्कार); *ममता कालिया;* पृ. 128 ₹ 200
(संयोजन : विज्ञान भूषण)
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
साक्षात्कार एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से किसी रचनाकार के रचना जगत को जितना जाना जा सकता है उतना ही उसके अंतर्जगत और बाह्य जगत को भी। प्रस्तुत पुस्तक में रचनाकार के 19 साक्षात्कार सम्मिलित हैं।

कंक्रीट की फसल (कहानी संग्रह)
अंजु दुआ जैमिनी; पृ. 144 ₹ 250
कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कंक्रीट की बढ़ती जाती फसल के साथ-साथ बेघरों की संख्या भी बेतहाशा बढ़ती जा रही है। इस संग्रह में मध्यवर्ग, स्त्री, दफ्तर आदि पर आधारित कहानियों के साथ-साथ अपने समय की चुनौतियों को भी पिरोया गया है।

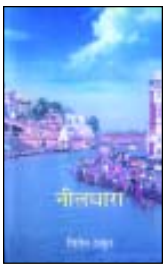

नीलधारा (उपन्यास)
जितेन ठाकुर; पृ. 128 ₹ 200
सुनील साहित्य सदन, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
एक अनाथ की व्यथा-कथा, जिसे अकाल प्रौढ़ बालक कहा जा सकता है, क्योंकि समय ने उसे समय से पहले ही जीवन का अर्थ समझा दिया। उसके पास बेशक खोने को कुछ न हो पर पाने को सब कुछ है। लिख डालने के फैशन से इतर एक मार्मिक कथा।

अमरो (बाल उपन्यास)
सुकीर्ति भटनागर; पृ. 140 ₹ 250
अयन प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-30
एक बाल उपन्यास, लेकिन शिक्षादायी और प्रेरक, संदेशपरक। बाल नायिका अमरो बालश्रमिक है और अनेक यातनाएँ सहती है। पर घर की गृहस्वामिनी उसे शिक्षित कर योग्य छात्रा बनाने में सहयोग करती है।

अपना-अपना आकाश : पंजाब की हिंदी कवयित्रियों की भावाभिव्यक्ति; *संपा. : उषा आर. शर्मा, डॉ. शशि प्रभा, प्रेम विज*
पृ. 196 ₹ 325
यूनीस्टार बुक्स प्रा. लि., एससीओ-26-27, सेक्टर 34ए, चंडीगढ़-160022
पंजाबी भाषी पंजाब की हिंदी की 36 कवयित्रियों की कविताओं का संग्रह। एक अच्छी कोशिश, एक अच्छा संकलन। किंतु कवयित्री परिचय को विस्तार से प्रस्तुत करने के लोभ से बचने पर और भी कविताओं को संग्रह में जगह मिल सकती थी।

साहित्य अमृत (हिंदी मासिक); *संपादक : त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी*
संयुक्त संपादक : प्रकाश मनु; पृ. 186 ₹ 100
4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
इस वर्ष स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती मनाई जा रही है। इस अवसर पर साहित्य अमृत पत्रिका ने स्वाजी जी पर एक महा विशेषांक निकाला है। इसमें स्वामी जी पर अनेक आलेख हैं (प्रेमचंद, निराला, सर्वपल्ली राधाकृष्णन समेत अनेक विभूतियों के), साथ ही, स्वामी जी के विचार भी। उनके जीवन और व्यक्तित्व पर आलेख हैं; पुस्तक अंश, नाटक, कविता और अन्य संदर्भित सामग्री भी। एक पठनीय और संग्रहणीय अंक।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के वसंत कुंज, नई दिल्ली स्थित मुख्यालय, नेहरू भवन के हरित परिसर में झंडोत्तोलन समारोह का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में न्यासकर्मियों की उपस्थिति में न्यास-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने संबोधन में सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना दी। निदेशक महोदय ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा कि ''पदाधिकारी तो आते-जाते रहते हैं लेकिन संस्थाएँ जिंदा रहती हैं। हम सब जिस संस्था में हैं वहाँ हम सब की भी अपनी-अपनी भूमिका और जिम्मेवारी है और हमें इसे लगन, निष्ठा और ईमानदारी से निभानी चाहिए।'' उन्होंने कहा कि विगत दो वर्षों में न्यास में अनेक नए और अभिनव कार्यों की शुरुआत की गई है और आगे भी ये जारी रहेंगे। विदित हो कि वर्ष 2013 से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला द्विवार्षिक से वार्षिक आयोजन बन गया है। न्यासकर्मियों के कल्याणार्थ भी अनेक नई शुरुआत हुई है। पुस्तक मेले और प्रदर्शनियों की संख्या में भी काफी बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि ''कार्य-अवधि पूरी हो जाने पर बेशक मैं इस संगठन से चला जाऊँ पर जब तक हूँ अपने सहयोगियों के सहयोग से न्यास के उद्‌देश्यों की पूर्ति में मैं अपनी पूरी ताकत और क्षमता से कार्य करता रहूँगा।''

न्यास-निदेशक ने कहा कि न्यास का उद्‌देश्य केवल पुस्तक विक्रय का नहीं है बल्कि न्यास पुस्तकोन्नयन एवं देश और विदेश में पुस्तक पठन प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के

उद्‌देश्य से बना है। यह बड़ी जिम्मेवारी है और हम सब 'टीम वर्क' से इस जिम्मेवारी को पूरा कर रहे हैं, करते रहेंगे।

झंडोत्तोलन के बाद न्यास में उप-निदेशक (स्थापना) श्री राकेश कुमार ने परिचयात्मक संबोधन किया।

कार्यक्रम के समापन वेला में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी न्यास में 25 वर्षों की सेवा अवधि पूर्ण कर लेने वाले न्यासकर्मियों का सम्मान किया गया। सम्मानित होने वाले न्यासकर्मी थे–श्री मुनीष कौरा (प्रवर श्रेणी लिपिक), श्री सत्य प्रकाश (बहुउद्‌देशीय कर्मचारी) एवं श्री महावीर भगवान (पैकर)।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के नए प्रकाशन : एक परिचय

टेलीविजन नाटक की पटकथा

गौरीशंकर रैणा

पृ. 114 ₹ 85

नाटकों का मंचन कई पीढ़ियों से, सदियों से, सारी दुनिया में होता रहा है, लेकिन टेलीविजन के आगमन ने नाटकों की दुनिया ही बदल दी है। बिंबों, ध्वनियों और शब्दों का अद्‌भुत समन्वय प्रभावी भावों को संप्रेषित करता है। आज के युग में टेलीविजन पर आने वाले सोप ऑपेरा लोगों के न केवल मनोरंजन का, बल्कि धारणा-निर्माण, जन जागरूकता आदि का अहम हिस्सा बन गए हैं। हर दिन सैकड़ों एपिसोड प्रसारित हो रहे हैं। इनके लिए पटकथा लिखना नए तरीके की लेखन-विधा है। इस पुस्तक में टेलीविजन के लिए नाटक की कथा के चयन, उसके पटकथा में रूपांतरण, कथा को प्रोडक्शन के लिए तैयार करने जैसे सभी पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। यही नहीं, कई चर्चित सोप ऑपेरा की स्क्रिप्ट, एक कहानी और उसकी रूपांतरित पांडुलिपि आदि को भी प्रस्तुत किया गया है।

जेएनयू से उच्चतर शिक्षा प्राप्त लेखक अनेक पुस्तकों के लेखक तथा अनुवादक भी हैं। संप्रति वे दिल्ली दूरदर्शन में कार्यक्रम अधिकारी हैं।

ISBN 978-81-237-6816-8

स्त्री कथा : कथा अनंता

रंजन ज़ैदी; पृ. 124 ₹ 80

स्त्री-विमर्श के तमाम वैचारिक हलचलों और हो-हल्ला के बावजूद आज भी आधी आबादी का सच बेहद भयावह और डरावना बना हुआ है। पूरे आसमान और गोलार्द्ध पर कब्जा जमाए पुरुष-सत्ता से स्त्री अपने हिस्से की माँग कर रही है; उसकी यह जद्‌दोजहद आज भी जारी है। आस्थाओं के बाजारीकरण के साथ ही स्त्री-विमर्श का भी विस्तार हुआ है। मीडिया के उभार के बीच स्त्री को महज 'वस्तु' या 'उत्पाद' के रूप में पेश किया जा रहा है।

लेकिन देश की महिलाएँ अब अपनी सच्ची और असली आजादी चाहती हैं। परिवार, समाज, राजनीति और अन्यान्य क्षेत्रों में भी स्त्री अपनी मुकम्मल जगह चाहती है। वह मुक्त होना चाहती है, उड़ना चाहती है। पूरी पृथ्वी की धुरी होकर भी अधूरी रहने के संत्रास से मुक्त होना चाहती है स्त्री।

इस पुस्तक में स्त्री-विमर्श के नए और व्यापक आयाम की तलाश की गई है। स्त्री-समस्याओं पर चर्चा है तो समाधान की कोशिश भी है। देश ही नहीं, दुनियाभर की स्त्री के वृहत्तर दुखों पर दृष्टि डाली गई है यहाँ।

लेखक **डॉ. रंजन ज़ैदी** हिंदी साहित्य-जगत के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। संप्रति 'मीडिया प्लेटफॉर्म' के उपाध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी।

ISBN 978-81-237-6809-0

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/09/2013

चिट्ठीघर

संवाद से देश-दुनिया के पुस्तक मेले, साहित्य आदि के अलावा कई अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकाशनों की जानकारी भी मिलती है। प्रस्तुति एवं संयोजन की जितनी प्रशंसा करूँ, कम है।

अशोक प्रियदर्शी, राँची, झारखंड

संवाद नियमित रूप से मिल रहा है। पत्र में प्रकाशित पुस्तकीय गतिविधियों की जानकारी ज्ञानवर्धक एवं सूचनापरक होती है।

प्रो. महेश दुबे, सानपाड़ा, नवी मुंबई, महाराष्ट्र

संवाद के माध्यम से यत्र-तत्र होने वाले पुस्तक मेलों के साथ-साथ प्रदर्शनी एवं गोष्ठियों की भी जानकारी मिलती है। पूरे देश में पुस्तक संस्कृति तथा हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान सराहनीय है।

डॉ. गौरी शंकर 'पथिक', सतना, म.प्र.

पत्रिका का हर अंक जानकारियों से भरा होता है–पुस्तकोन्नयन के क्षेत्र में न्यास के कार्यों से। पुस्तक मेले, पुस्तक प्रदर्शनी, संगोष्ठी आदि के आयोजन से देश में पुस्तक संस्कृति का निर्माण हो रहा है। पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय उपयोगी है।

प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

मोगा पुस्तक मेला, पंजाब

28 सितंबर से 6 अक्तूबर, 2013

स्थान : **गुरु नानक कॉलेज, मोगा**

समय : **प्रातः 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक**

आयोजक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

चित्रकार पुलक विश्वास नहीं रहे

प्रख्यात चित्रकार **पुलक विश्वास** का विगत 28 अगस्त, 2013 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। कोलकाता, लंदन एवं एम्सटर्डम में शिक्षा प्राप्त विश्वास को यूनेस्को द्वारा ग्राफिक डिजाइन एवं इलस्ट्रेशन में विशिष्ट अध्ययन हेतु फेलोशिप भी प्रदान किया गया था। देश और विदेश में उनके अनेक एकल एवं समूह प्रदर्शनियाँ लगाई गई थीं।

पुलक विश्वास का राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से गहरा जुड़ाव था। उन्होंने न्यास की अनेक पुस्तकों के लिए चित्र बनाए थे। कुछ पुस्तकों के नाम हैं : *चमकदार गुफा; बड़े सयाने, बड़े चालाक; छोटी चींटी बड़ा काम* आदि।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

बिलासपुर पुस्तक मेला, छत्तीसगढ़	–	सितंबर, 2013
चेन्नई पुस्तक मेला, तमिलनाडु	–	सितंबर, 2013
भोपाल/इंदौर पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	अक्तूबर, 2013
इलाहाबाद पुस्तक मेला, उत्तर प्रदेश	–	अक्तूबर, 2013
बाल पुस्तक मेला, कोचीन/तिरुवनंतपुरम	–	अक्तूबर-नवंबर, 2013
राँची/पटना पुस्तक मेला, बिहार	–	नवंबर, 2013
चंडीगढ़ पुस्तक मेला, केंद्रशासित क्षेत्र	–	दिसंबर, 2013
हैदराबाद पुस्तक मेला, आंध्र प्रदेश	–	दिसंबर, 2013

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :

उप-निदेशक (प्रदर्शनी) दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070